अष्टम भाव और मांगल्य

मार्गदर्शक: नवल सिंह

– सुनीता अरोड़ा

जन्मकुंडली का अष्टम भाव रहस्यों से परिपूर्ण है। अष्टम भाव अथवा भावेश यदि अशुभ प्रभाव में हो तो स्त्री को वैधव्य दु:ख भोगना पड़ता है। यहां हमने **सारावली, जातक पारिजात, जातकतत्त्वम् तथा बृहज्जातकम्** आदि ज्योतिषीय ग्रन्थों से अष्टम स्थान हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य जुटाए हैं जो स्त्री के मांगल्य को प्रभावित करते हैं।

प्रमुख योग

1. सप्तमेश व अष्टमेश दोनों पाप ग्रहों के साथ छठे या द्वादश भाव में स्थित हों।
2. मंगल सप्तम या अष्टम में दो या अधिक पाप ग्रहों के साथ हो।
3. सप्तमेश और अष्टमेश में परिवर्तन और पाप ग्रहों की दृष्टि या युति हो।
4. सप्तम भाव मेष अथवा वृश्चिक राशि का हो तथा इसमें राहु हो व मंगल छठे, अष्टम या द्वादश में हो।
5. सप्तम भाव में केतु तथा पाप ग्रहों से युक्त मंगल अष्टम या द्वादश में हो।
6. लग्न, सप्तम एवं अष्टम में मंगल, शनि एवं राहु हो।
7. मेष या वृश्चिक के सप्तम भाव में राहु दो या अधिक पाप ग्रहों के साथ हो।
8. लग्न एवं सप्तम में पाप ग्रह हो और शुभ दृष्टि या युति का अभाव हो (सात वर्ष में वैधव्य)।
9. द्वितीय एवं सप्तम में पाप ग्रह हो तथा चन्द्रमा से छठे या आठवें भाव में पाप ग्रह हो (आठ वर्ष में)।
10. सप्तम व अष्टम पाप प्रभाव में हों और चन्द्रमा छठे या अष्टम भाव में हो (आठ वर्ष में)।
11. बुध सप्तमेश होकर पाप ग्रहों के साथ नीच या शत्रु राशि में अष्टम में पाप ग्रहों से दृष्ट हो (पत्नी पति की हंता)।
12. चन्द्रमा पापकर्तरी में हो तथा चन्द्र लग्न से सप्तम व अष्टम में पाप ग्रह हो।
13. चन्द्र-राहु युति के साथ शुक्र-मंगल युति भी हो और

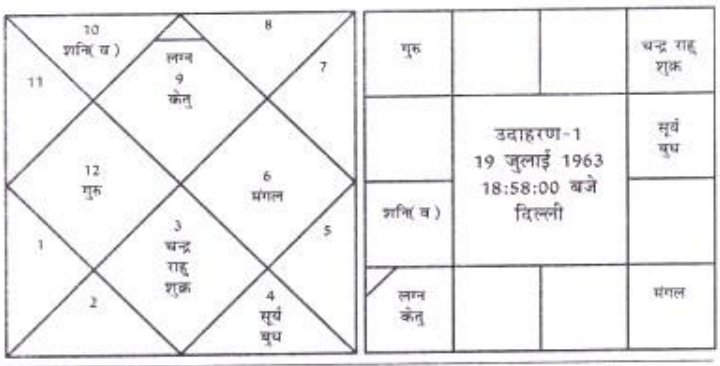

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
28° 10'	02° 48'	15° 55'	02° 06'	09° 19'	25° 25'	21° 26'	28° 10'	27° 06'
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	शनि	गुरु	शुक्र	चन्द्र	बुध	सूर्य	मंगल	

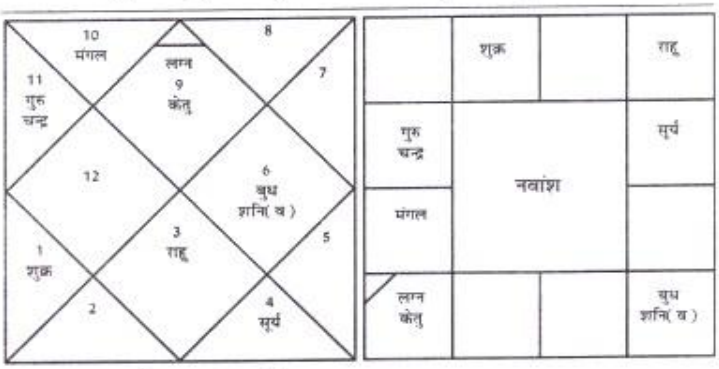

अष्टम में पाप ग्रह हो।

14. लग्न में शनि और अष्टम या द्वादश में मंगल पाप ग्रह के साथ हो।
15. लग्न में सूर्य और सप्तम में मंगल हो।
16. लग्न में चन्द्रमा और सप्तम में मंगल तथा इनमें से कोई एक अष्टमेश से दृष्ट हो।
17. सप्तम में बुध व शनि हों (विधवा तथा व्यभिचारिणी)।
18. सप्तम में मंगल और उस पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो (जवानी में विधवा)।
19. षष्ठेश व अष्टमेश पाप ग्रहों के साथ छठे या अष्टम भाव में हों।
20. सप्तमेश छठे, अष्टम या द्वादश में हो और अष्टमेश सप्तम में तथा इनमें से किसी एक पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो (जवानी में वैधव्य)।

सारांश यह है कि स्त्री की कुंडली में लग्न, चन्द्र लग्न, कारक शुक्र

से सप्तम/सप्तमेश, अष्टम/अष्टमेश, विशेषतया इन पर पाप प्रभाव देखें। यह भी अवश्य जांचें कि इन पर कोई शुभ प्रभाव है या नहीं। इसकी पुष्टि नवांश कुंडली से भी करें।

आइए अब हम कुछ कुंडलियों पर उपरोक्त तथ्यों की जांच करते हैं–

उदाहरण-1

प्रस्तुत कुंडली में सप्तमेश बुध तथा अष्टमेश चन्द्रमा का राशि परिवर्तन है। सप्तम भाव में षष्ठेश शुक्र स्थित हैं। सप्तम भाव राहु-केतु अक्ष में पीड़ित है। अष्टम भाव में सप्तमेश बुध के साथ सूर्य भी है तथा यह भाव वक्री शनि से दृष्ट है। शनि वक्री दृष्टि से सप्तम भाव को भी प्रभावित कर रहे हैं।

कारक शुक्र राहु-केतु अक्ष में अष्टमेश चन्द्र से युत है। शुक्र से सप्तम भाव पर पापी मंगल का प्रभाव है तथा अष्टम में वक्री शनि है।

नवांश– सप्तम स्थान पुनः राहु-केतु परिधि में होने के साथ वक्री शनि से दृष्ट है। अष्टम भाव मंगल से पीड़ित है।

कारक शुक्र भी मंगल से पीड़ित है तथा शुक्र से अष्टम वक्री शनि के प्रभाव में है। सप्तमेश बुध वक्री शनि से युति में है।

पति का देहान्त– जातिका के पति की मृत्यु 26 मई, 1992 के दिन **शनि/शुक्र/सूर्य** (22.5.1992 से 19.7.1992) की दशा में हुआ। महादशानाथ शनि शुक्र से अष्टम भाव में स्थित है। अंतर्दशानाथ शुक्र सप्तम भाव में अष्टमेश चन्द्र के साथ राहु-केतु अक्ष में है। प्रत्यन्तरदशानाथ सूर्य अष्टम में सप्तमेश बुध के साथ है।

इस प्रकार से दशा भी कुंडली में उपस्थित पाप प्रभाव की पुष्टि करती है।

उदाहरण-2

प्रस्तुत कुंडली में सप्तमस्थ मंगल की सप्तमेश शुक्र पर दृष्टि है। अष्टमेश बुध, सूर्य व राहु से युत होकर शनि की वक्री दृष्टि से पीड़ित है। अष्टम भाव **पापकर्तरी** में है। षष्ठेश मंगल की सप्तम भाव में स्थिति मांगलिक दोष को दिखा रही है।

कारक शुक्र मंगल से पीड़ित है तथा शुक्र से अष्टम भाव पर शुक्र से षष्ठेश/सप्तमेश वक्री शनि की दृष्टि है। चन्द्रमा भी पक्षबली नहीं है।

नवांश– सप्तम मंगल से दृष्ट है तथा सप्तमेश

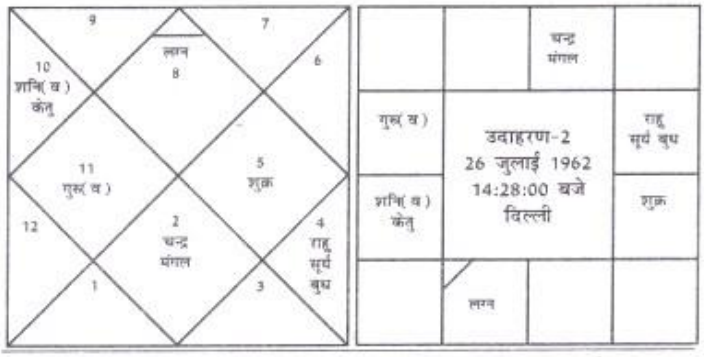

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
03° 10'	09° 33'	07° 48'	18° 38'	05° 47'	18° 26'	21° 55'	15° 08'	15° 38'
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	सूर्य	चन्द्र	बुध	

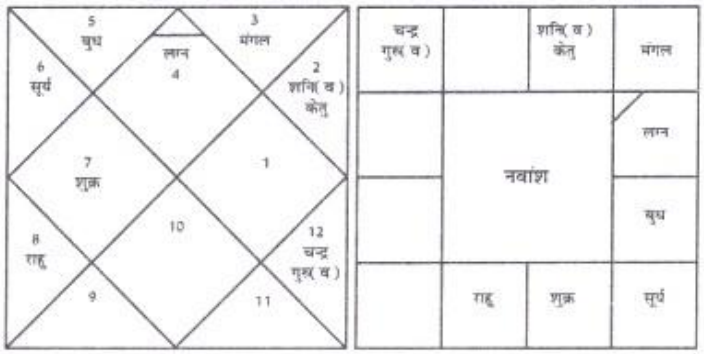

शनि राहु-केतु अक्ष में है। शनि अष्टमेश भी है।

कारक शुक्र **पापकर्तरी** में है। शुक्र से अष्टम भाव शनि तथा राहु-केतु के पाप प्रभाव में है।

पति की मृत्यु– इनके पति कर देहावसान 27 दिसम्बर, 2005 को **गुरु/केतु/राहु** (14.11.2005 से 4.1.2006) की दशा में हुआ। महादशानाथ गुरु शुक्र से अष्टमेश होकर सप्तमस्थ है। अंतर्दशानाथ केतु वक्री शनि से युत होकर अष्टमेश बुध से भी दृष्टि संबंध बनाए हुए हैं।

उदाहरण-3

कुंडली में सप्तमेश सूर्य पर षष्ठस्थ वक्री मंगल की दृष्टि है। अष्टमेश बुध वक्री है तथा वक्री शनि और वक्री मंगल से पीड़ित है। अष्टम भाव पर शनि की वक्री दृष्टि है।

कारक शुक्र गण्डांत में राहु-केतु अक्ष में है। शुक्र से सप्तम भाव में केतु वक्री मंगल द्वारा दृष्ट है। शुक्र से अष्टम में नीच का चन्द्रमा है। साथ ही, शुक्र से अष्टमेश मंगल भी नीच का है। इस प्रकार से शुक्र से चतुर्थ, सप्तम तथा अष्टम भाव पीड़ित है। चन्द्रमा तथा मंगल के नीचगामी परिवर्तन ने पीड़ा को बढ़ाया है।

नवांश– सप्तम भाव में वक्री सप्तमेश बुध स्वराशिस्थ है। बुध पर षष्ठेश सूर्य तथा वक्री मंगल की दृष्टि है। अष्टम भाव भी वक्री मंगल

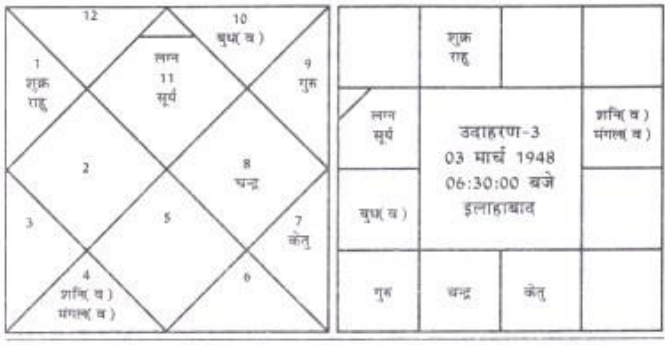

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
19° 55'	19° 14'	23° 13'	29° 25'	28° 28'	03° 01'	00° 48'	24° 20'	23° 19'
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	मंगल	बुध	शनि	चन्द्र	सूर्य	गुरु	शुक्र	

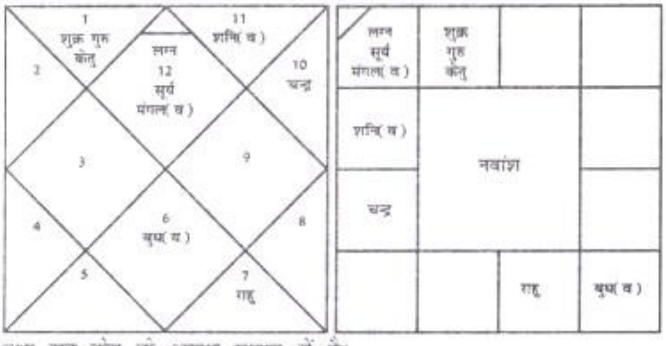

तथा राहु-केतु के अशुभ प्रभाव में है।

कारक शुक्र नवांश का अष्टमेश होकर राहु-केतु परिधि में है और वक्री शनि से दृष्ट है। शुक्र से सप्तम भाव भी राहु-केतु तथा वक्री मंगल के पाप प्रभाव में है। शुक्र से अष्टम भाव वक्री शनि के प्रभाव में है तथा अष्टमेश मंगल स्वयं वक्री है।

पति की मृत्यु– इनके पति की 13 सितम्बर, 2002 को **मंगल/शनि/शुक्र** (3.8.2002 से 10.10.2002) की दशा में मृत्यु हुई थी। वे फेफड़े के कैन्सर से पीड़ित थे। महादशानाथ मंगल शुक्र के राशीश होने के साथ शुक्र से अष्टमेश भी है तथा अंतर्दशानाथ वक्री शनि से युतियुत है। शुक्र राहु-केतु अक्ष में शनि से दृष्ट है।

उदाहरण-4

कुंडली में सप्तम भाव में मंगल मांगलिक दोष को दर्शाता है। सप्तमेश सूर्य अष्टम भाव में स्थित है।

कारक शुक्र की सप्तमेश सूर्य से अष्टम भाव में युति है। यहां नीचस्थ शुक्र **पापकर्तरी** में है। शुक्र से सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि है तथा शुक्र से अष्टम भाव शनि और बुध से दृष्ट है। बुध लग्न से अष्टमेश भी है। शुक्र से चतुर्थ भाव भी शनि के प्रभाव में है।

नवांश– यहां सप्तमेश द्वादश भाव में मंगल के साथ है वहीं अष्टमेश चन्द्रमा सप्तम भाव में कारक शुक्र से युति में है। शुक्र से चतुर्थ भाव भी राहु-केतु अक्ष में पीड़ित है।

पति की मृत्यु– इनके पति की मृत्यु 9 सितम्बर, 1988 को **गुरु/शनि/शुक्र** (16.6.1988 से 18.11.1988) की दशा में हुई थी। महादशानाथ गुरु जन्मकुंडली में शनि से तथा नवांश में राहु-केतु से पीड़ित हैं। अंतर्दशानाथ शनि जन्मकुंडली में अष्टमेश के साथ हैं तथा नवांश में मंगल से दृष्ट हैं।

कारक तथा प्रत्यन्तरदशानाथ शुक्र जन्मकुंडली में नीच के होकर अष्टम भाव में सप्तमेश सूर्य के साथ हैं तथा नवांश में अष्टमेश चन्द्रमा के साथ हैं।

उदाहरण-5

कुंडली में सप्तम भाव पर षष्ठेश मंगल तथा तृतीयेश/चतुर्थेश शनि की दृष्टि है। सप्तमेश शुक्र अष्टमेश बुध के साथ **पापकर्तरी** में स्थित है।

कारक शुक्र अष्टमेश बुध के साथ है। शुक्र से अष्टमेश भी बुध है। शुक्र से अष्टम भाव भी शनि की दृष्टि से पीड़ित है।

नवांश– सप्तम भाव राहु-केतु अक्ष में है। अष्टमेश शुक्र द्वादश भाव में होकर शनि तथा मंगल से दृष्ट है। शुक्र से सप्तम भाव में स्वयं शनि स्थित है तथा शुक्र से अष्टम भाव राहु-केतु परिधि में है।

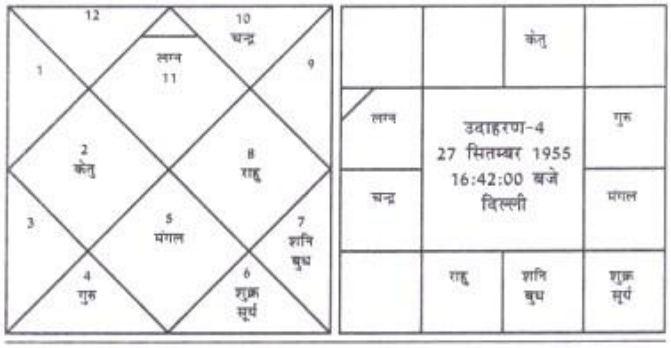

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
09° 43'	10° 19'	17° 05'	26° 31'	04° 29'	29° 14'	17° 21'	24° 56'	27° 37'
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	गुरु	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	सूर्य	बुध	

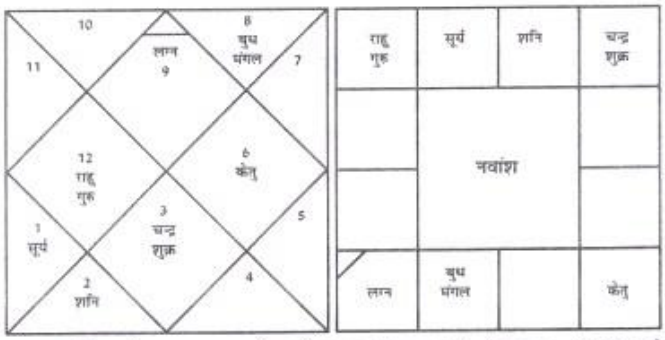

पति की मृत्यु– इनके पति का देहान्त 19 दिसम्बर, 2008 को **मंगल/शुक्र/मंगल** (13.12.2008 से 7.1.2009) की दशा में हुआ था। महादशा तथा प्रत्यन्तरदशानाथ मंगल द्वादश भाव में राहु-केतु अक्ष में है।

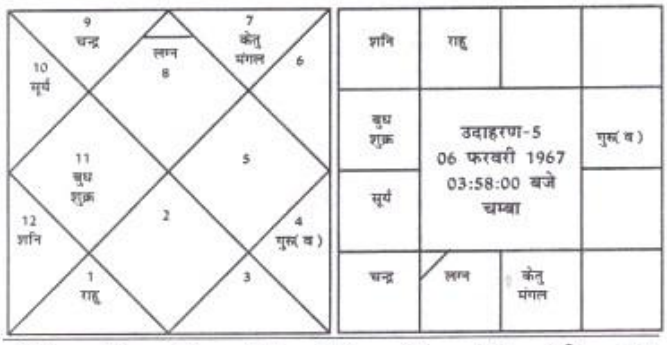

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
29° 46'	23° 02'	12° 11'	04° 49'	06° 27'	03° 53'	14° 16'	03° 39'	17° 56'
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	सूर्य	शुक्र	चन्द्र	बुध	मंगल	गुरु	शनि	

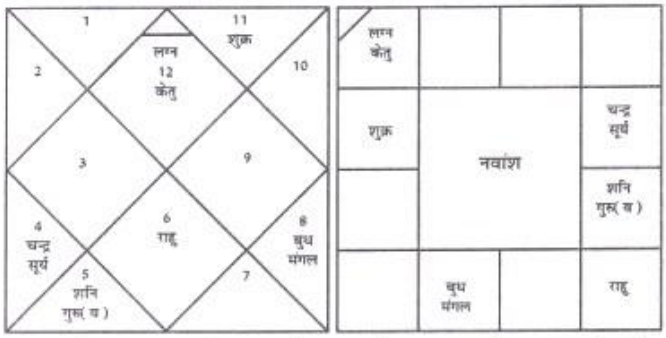

नवांश में मंगल सप्तमेश बुध के साथ बैठकर अष्टमेश शुक्र से दृष्टि संबंध बनाए हुए हैं। अंतर्दशानाथ शुक्र भी द्वादश भाव में शनि व मंगल से पीड़ित है।

उपरोक्त सभी कुंडलियों में यह दृष्टिगत है कि ग्रह के कारकत्त्व का भाव से प्रत्यक्ष संबंध होता है।